Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 12, December-2018, ISSN 2230-7540

भूमंडलीकरण एवं हिन्दी

Dr. Upasana Jindal*

Ph.D. (Hindi), M.Phil. (Hindi), M.A. (Hindi), B.Ed.

सार – ***जब हम विश्व के रंगमंच पर खड़े होकर दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि विश्व के अनेक देशों में हिन्दी का वर्चस्व कायम है। आज के इस भूमण्डलीकरण के युग में हिन्दी भाषा और उसका साहित्य दिनो-दिन प्रगति के पथ पर दौड़ रहा है। आज हिन्दी केवल राष्ट्रभाषा या सम्पर्क भाषा नहीं है अपितु 'विश्वभाषा' है। आज के इस तकनीकी युग में हिन्दी का महत्त्व सर्वोपरि है। नागपुर में हुए प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन में यह प्रस्ताव पास हुआ था कि संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को मान्यता प्रदान की जाए। प्रसन्नता की बात है कि भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी व विदेशी मंत्री श्री वी.पी. नरसिंहराव ने भी संयुक्त राष्ट्र संघ के सम्मेलनों में हिन्दी में भाषण दिया। उल्लेखनीय बात यह है कि आज संसार के लगभग सवा सौ विश्वविद्यालयों में हिन्दी सिखाई-पढ़ाई जा रही है। अनेक विदेशी विश्वविद्यालयों में हिन्दी में शोध कार्य हो रहा है।***

----------X----------

इस भूमंडलीकरण एवं वैश्वीकरण के युग में उन देशों का उल्लेख करना उचित होगा कि जहाँ जोर-शोर से हिन्दी का प्रचार-प्रसार हो रहा है। आज भी विश्व हिन्दी सम्मेलनों में हिन्दी को उचित स्थान दिया जा रहा है। आज एशिया व यूरोपीय देशों में हिन्दी का परचम लहरा रहा है। मॉरिशस व सूरीनाम देशों की गणना उन देशों में की जाती है जिन्होंने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विशेष योगदान किया है।

मॉरिशस में अधिकांश भारतीय मूल के लोग हैं, उनकी सम्पर्क भाषा हिन्दी है। मॉरिशस विश्व का पहला देश है, जहाँ की संसद ने कानून बनाकर हिन्दी को बढ़ावा देने का दायित्व संभाला है। मॉरिशस ही वह पहला देश है जिसने राष्ट्रसंघ में हिन्दी के प्रवेश का प्रस्ताव प्रस्तुत किया था। नागपुर के प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर मॉरिशस के तत्कालीन युवा व क्रीड़ा मंत्री श्री दयानंद वसंतराय ने कहा था- ''हिन्दी हमारी संस्कृति और धर्म की भाषा है। हिन्दी हमारे उन्मुक्त चिंतन की भाषा है। हिन्दी ऐसी भाषा है जिसके द्वारा हम विश्व के बहुत बड़े जनसमुदाय से जुड़े हैं। उससे कटना हमारे लिए संभव नहीं है।''1

डॉ. कमलकिशोर गोयनका का गत तीन दशकों से मॉरिशस से निकट सम्बन्ध रहा है और वहाँ के लेखक, कवि और उपन्यासकार अभिमन्यु 'अनंत' की कई हिन्दी पुस्तकों का उल्लेख किया है। डॉ. गोयनका ने अन्य कई हिन्दी लेखकों का भी उल्लेख किया है जो आज भी निरंतर लिख रहे हैं, जिनमें प्रमुख हैं- श्रीमती डॉ. संयुक्ता देवी, डॉ. बीरसेन जागासिंह, अजमिल माताबदल, सत्यदेव टेंगर, प्रहलाद रामशरण आदि। मॉरिशस में हिन्दी पत्रकारिता के उद्भव और विकास में अनेक संस्थाओं ने योगदान किया है जिसमें प्रमुख हैं- 'हिन्दी परिषद', 'आर्य सभा', 'हिन्दी प्रचारिणी सभा', 'आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा', 'हिन्दी लेखक संघ', 'हिन्दी शिक्षक संघ', 'हिन्दी संगठन' आदि प्रमुख हैं। 'मॉरिशस आर्य पत्रिका', 'मॉरिशस मित्र', 'आर्यवीर', 'वसंत', 'जागृति', 'आर्योदय', 'मजदूर', 'समाजवाद', 'अनुराग', 'दर्पण', 'इन्द्रधनुष', 'मुक्ता'आदि पत्रिकाएँ प्रमुख हैं जो हिन्दी में प्रकाशित होती हैं।2

'सूरीनाम' में भी भारतीय लोगों का वर्चस्व है। भारतवंशी लोग घरों में भोजपुरी, अवधी, खड़ी बोली का मिश्रित प्रयोग करते हैं। सूरीनाम के हिन्दी सेवियों में प्रमुख हैं- सर्वश्री जानकी प्रसाद सिंह, डॉ. ज्ञान अधीन, डॉ. उमादत्त 'सतीश', शेर बहादुर झा, रामदत्त मिश्र आदि।

नेपाल का भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विशेष योगदान रहा हे। नेपाल के ब्रह्मदेव की हिन्दी-साहित्य को विशेष देन है। उन्होंने कहानी व बाल साहित्य को समृद्ध किया है। उनकी आठ पुस्तके प्रकाशित हुई हैं। उनकी सुपुत्री सुनीता कालरा एक अच्छी कहानीकार हैं। श्रीमती मानवती आर्य ने अनेक हिन्दी पुस्तकें लिखी हैं। नेपाल से अनेक हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई हैं, जिनमें प्रमुख है- 'साहित्य लोक', 'प्राची

www.ignited.in

प्रकाश', 'ब्रह्मभूमि' आदि ये पत्रिकाएँ भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार में योग दे रही हैं।"3

जापान में हिन्दी शिक्षण की व्यवस्था 80 वर्ष से चली आ रही है। 'तोक्यो विदेशी-भाषा विश्वविद्यालय' के पुस्तकालय में लगभग 50,000 से अधिक हिन्दी की पुस्तकें संग्रहीत हैं, जिनमें अनेक दुर्लभ ग्रंथ भी हैं।4 टोकियो और ओशाखा विदेशी-भाषा विश्वविद्यालय में हिन्दी का चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम चल रहा है। हिन्दी के प्रमुख हिन्दी विद्वानों में कयाया दोई, एडवोसावा, तोशियो तानाका, प्रो. कात्सुरो कांगा, तोमियो मिजोकामि, नाकामुरा डॉ. लक्ष्मीघर मालवीय, डॉ. नरेश मंत्री, डॉ. रमेश माथुर आदि उल्लेखनीय हैं। योशियादी सुजाकि जापान की हिन्दी पत्रिका के सम्पादक हैं। प्रो. कोगा ने 'संक्षिप्त हिन्दी-जापानी शब्दकोश' तैयार किया है। प्रो. सुजाकि द्वारा संपादिक वार्षिक पत्रिका 'ज्वालामुखी' में केवल जापानी लेखकों की हिन्दी रचनाएँ प्रकाशित होती हैं। ओसाका में आजकल प्रो. तेमिओर मिजोकामि जापानी लोगों को हिन्दी पढ़ाने के साथ-साथ लेखन कार्य भी करते है।

चीन में रामायण की कहानियाँ बहुत लोकप्रिय हैं। चीन के बेजिंग विश्वविद्यालय के हिन्दी-प्रोफेसर प्रो. जिन डिंगहेन ने 'रामचरितमानस' का चीनी भाषा में पद्यानुवाद किया है जिसकी 2500 प्रतियाँ हाथों हाथ बिक गईं थीं।5 चीन के ल्यूकोनान ने फणीश्वरनाथ रेणु के 'मैला आँचल' का चीनी भाषा में अनुवाद किया है। चीन में ही डॉ. उषा शर्मा 'ठाकुर' चीनी लोककथाओं का हिन्दी में अनुवाद करने का कार्य कर रही हैं।

हिन्दी के संदर्भ में फीजी का उल्लेख करना आवश्यक है। डॉ. विवेकानंद शर्मा फीजी के प्रतिष्ठित विद्वान् ने दिल्ली विश्वविद्यालय से सन् 1983 में 'तुलसी का प्रवासी फीजी निवासी भारतीयों पर प्रभाव' पर शोध करके पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। फीजी के जोगिन्दर सिंह 'कंवल' हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार हैं। 'धरती मेरी माता', 'सवेरा' आदि उनके चर्चित उपन्यास हैं। आस्ट्रेलिया में भी हिन्दी का प्रचार-प्रसार हो रहा है। सन् 1978 से मेलबोर्न में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। डॉ. दिनेश श्रीवास्तव विक्टोरिया में 'हिन्दी केन्द्र' चला रहे हैं।

रूस के प्रो. दीमशित्स ने अपने अध्ययन-अध्यापन व अनुसंधान के दीर्घ अनुभव के आधार पर हिन्दी को एक सांगोपांग व्याकरण देने का प्रयास किया है। सोवियत सघ की 'विज्ञान अकादमी' ने सन् 1926 में तुलसीकृत 'रामचरितमानस' का रूसी भाषा में अनुवाद कराया जो छंदोबद्ध है।6 रूस के ही बी.एम. बेसक्रोत्री ने प्रेमचंद की अनेक रचनाओं का रूसी भाषा मंे अनुवाद किया है। प्रो. केलिशेव ने 'आधुनिक हिन्दी काव्य' शीर्षक पुस्तक रूसी में प्रकाशित की है।

जर्मनी में फ्राइबुग नामक संस्था ने हिन्दी कवियों की कतिपय रचनाओं का जर्मन में अनुवाद किया है। डॉ. लोथार लुत्से से भी हिन्दी की अनेक रचनाओं का जर्मन में अनुवाद किया है। गजानन मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, नागार्जुन, त्रिलोचन, रघुवीर सहाय, श्रीकांत वर्मा, लीलाधर जगूड़ी, प्रयाग शुक्ल आदि कवियों की रचनाओं का प्रो. लुत्से ने जर्मन में अनुवाद किया है।

हिन्दी के प्रचार-प्रसार में इंग्लैण्ड की विशेष भूमिका रही है। दिव्या माथुर, गौतम सचेदव, उषा राजे सक्सेना, पद्मेश गुप्त, मोहन राणा, सत्येन्द्र श्रीवास्तव, उषा वर्मा, राकेश माथुर, के.जी. खंडेलवाल आदि के नाम उल्लेखनीय हैं जो हिन्दी के प्रचार-प्रसार में लगे हुए हैं। ब्रिटेन में इस समय अंग्रेजी के बाद हिन्दी सर्वाधिक बोली जाती है। इंग्लैण्ड में लगभग 26 लाख भारतीयों के अलावा, सभी एशियाई लोग अपनी बोलचाल में हिन्दी का प्रयोग करते हैं। बी.वी.सी. की हिन्दी सेवा तो विश्वविख्यात है।

इटली की भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विशेष भूमिका रही है। डॉ. मिलानेती और प्रो. लक्ष्मण प्रसाद मिश्र द्वारा संपादित 'इतावली-हिन्दी कोश' की हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका रहा है। वेनिस विश्वविद्यालय में भारत के डॉ. लक्ष्मण प्रसाद मिश्र का हिन्दी प्रचार में विशेष योगदान रहा है। इटली में हिन्दी प्राध्यापकों में डॉ. पे्रमशंकर, डॉ. जायसवाल, डॉ. दुर्गा दीक्षित, डॉ. जगदम्बा श्रीवास्तव, प्रो. कसाना के नाम उल्लेखनीय हैं जिन्होंने इटली के अनेक लोगों को हिन्दी सिखाई। सन् 1911 में इटली के विद्वान् डॉ. एस.जी. तोरसीतोरी ने 'रामचरितमानस' और वाल्मीकीय रामायण का तुलनात्मक अध्ययन करके पीएच.डी. की उपाधि अर्जित की।

नार्वे में प्रसिद्ध साहित्यकार हिमांशु जोशी के पुत्र अमित जोशी ने हिन्दी-पत्रिका का प्रारंभ किया। सुरेशचन्द्र शुक्ल ने सन् 1988 में 'स्पाइल' (दर्पण) द्विमासिक पत्रिका निकाली, जो अब तक निकल रही है। 'स्पाइल' पत्रिका अंगे्रजी व हिन्दी दोनों भाषाओं में छपती है। विदेशों में सर्वाधिक पढ़ी जाने वाली हिन्दी पत्रिका 'शांतिदूत' नार्वे से ही छपती है। यह अप्रवासी भारतीयों की एक मात्र हिन्दी पत्रिका है।

अमेरिका में हिन्दी भाषा तथा उसके साहित्य के प्रति बड़ी रुचि है। यही कारण है कि इस देश के 41 विश्वविद्यालयों में हिन्दी का पठन-पाठन हो रहा है।7 विगत वर्षों में हिन्दी के

www.ignited.in

पठन-पाठन के लिए पाठ्य-पुस्तकें, कोष आदि तैयार किए जा रहे हैं। यहाँ कैलिफोर्निया, विस्कांसन, टेक्सास, वाशिंगटन, कोलम्बिया आदि विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्यापन केन्द्र खुले हैं। प्रो. माइकेल सी. शेपिरों हिन्दी का इतिहास लिखने में लग रहे हैं। अमेरिका में, हिन्दी के भक्ति साहित्य पर, तुलसी, मीरा, कबीर, विद्यापति, जायसी आदि पर शोध किया जा रहा है और इनसे सम्बन्धित अनेक पुस्तकें भी छपी हैं। महाकवि सूरदास के सूरसागर पर यू.एस.ए. के प्रो. जान. एस. हाले तथा केनथ ब्रायट महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। ये विद्वान् प्राचीनतम हस्तलिखित ग्रंथो के आधार पर 'सूरसागर' का नया संस्करण निकालने में लगे हुए हैं।

प्रो. के. शोयर तथा अनेक अमरीकन विद्वान् राजस्थान, मध्यप्रदेश आदि की लोककथाएँ एकत्र करके उनका अनुवाद अंग्रेजी में कर रहे हैं। प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी वर्मा के कई संग्रह इस देश में प्रकाशित हुए हैं। फणीश्वरनाथ 'रेणु' व उपेन्द्रनाथ अश्क वहाँ के लोकप्रिय साहित्यकार हैं। 'दि जनरल ऑफ़ साउथ एशियन लिटरेचर' नामक पत्रिका में हिन्दी की चर्चित कहानियों में अनुवाद प्रकाशित हो रहे हैं।

'भारतीय विद्या भवन (न्यूयार्क)', 'बाल भारती सान फ्रांसिस्को', 'विश्व वैदिक अध्ययन परिषद्', 'हिन्दू विश्वविद्यालय', 'भारतीय साहित्य संगम', 'अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी फाउंडेशन', 'विश्व हिन्दी समिति' आदि अमरीकी संस्थाएँ हिन्दी के लिए श्रेष्ठ कार्य कर रही हैं। भारत के भूदेव शर्मा, डॉ. राम चैधरी, डॉ. कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह, रविप्रकाश सिंह, रामेश्वर अशांत आदि विद्वान् हिन्दी के प्रचार-प्रसार में जुटे हुए हैं। ये विद्वान् अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठियों के माध्यम से हिन्दी का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। श्रीमती सावित्री गौड़, डॉ. अंजना संधीर, डॉ. सुषमा वेदी आदि महिलाएँ भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विशेष योग रही हैं। अमेरिका में सन् 1980 से विश्वा (त्रैमासिक) पत्रिका का हिन्दी में प्रकाशन हो रहा है। डॉ. कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह ने हिन्दी के प्रचार हेतु 'सौरभ' नामक पत्रिका का प्रकाशन किया। डॉ. भूदेव शर्मा 'विश्व विवेक' हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन कर रहे हैं, जिसमें कविता, कहानी, संस्मरण, यात्रा वृतांत, व्यंग्य लेख आदि हिन्दी में प्रकाशित होते हैं। वस्तुतः आज के भूमण्डलीकरण, वैश्वीकरण, सूचना प्रौद्योगिक, विश्व बाजारवाद, विज्ञान तकनीकी और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के दौर में हिन्दी के नये रूप-रंग दृष्टिगोचर हो रहे हैं। हिन्दी नये दौर में नई चाल चल रही है।8

जनसंचार के माध्यमों में हिन्दी पत्रकारिता का महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में हिन्दी के प्रयोग से रोजगार में वृद्धि हो रही है। पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों, विज्ञापन, पोस्टर, हैंडबिल, पम्पलैट्स आदि का प्रचार-प्रसार विदेशों में हो रहा है। कम्प्यूटर, इंटरनैट, लैपटॉप, ई-मेल, फैक्स, पेजर, वेबसाइट, वेबपोर्टल, फेसबुक आदि माध्यमों से हिन्दी का प्रचार-प्रसार हो रहा है। वस्तुतः भारत विश्व का एक बड़ा बाजार माना जा रहा है। व्यापारिक कम्पनियाँ अपना माल बेचने के लिए विज्ञापनों का सहारा लेती हैं। अधिकांश विज्ञापन हिन्दी में प्रस्तुत किये जाते हैं। वस्तुतः हिन्दी का व्यापारीकरण व व्यावसायीकरण सम्बन्धी विज्ञापन अंग्रेजी के साथ जुड़े हैं।9

यरि राष्ट्रीय परिदृश्य में हिन्दी को देखा जाए तो हिन्दी का भूमंडलीकरण हो रहा है। विदेशी कम्पनियाँ अपना रोजगार चलाने के लिए हिन्दी का सहारा ले रहे हैं। आज विश्व-स्तर पर हिन्दी का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है। विदेशी कम्पनियाँ अपना माल बेचने के लिए हिन्दी शिक्षण को बढ़ावा दे रही हैं। वह दिन दूर नहीं जब हिन्दी 'विश्व-हिन्दी' बन जाएगी।

संदर्भ

1. आचार्य अखिल विनय, साहित्य, भक्ति और दर्शन का वैभव, पृ. 1226
2. वही, पृ. 1226
3. वही, पृ. 1229
4. वही, पृ. 1229
5. वही, पृ. 1231
6. वही, पृ. 1231
7. वही, पृ. 1233
8. बाबूराम, सप्तसिंधु (अंक 8, 2014), पृ. 34
9. वही, पृ. 35

Corresponding Author

Dr. Upasana Jindal*

Ph.D. (Hindi), M.Phil. (Hindi), M.A. (Hindi), B.Ed.

www.ignited.in